अनमोल विचार

कामयाब लोग अपने फैसले से दुनिया बदल देते है और नाकामयाब लोग दुनिया के डर से अपने फैसले बदल लेते हैं।

जालंधर ब्रीज

साप्ताहिक समाचार पत्र

इस सप्ताह का विचार

आदमी को कभी भी सीधा और सरल नहीं होना चाहिए। जंगल में जो पेड़ सीधे, चिकने होते हैं और जिन्हें काटने में कठिनाई नहीं होती, उन्हें ही सबसे पहले काटा जाता है।

–चाणक्य

• JALANDHAR BREEZE • WEEKLY •YEAR-1 • 5 MARCH TO 11 MARCH 2020 • VOLUME-26 • PAGES- 4 • RATE- 3/- • www.jalandharbreeze.com • RNI NO.:PUNHIN/2019/77863

दिल्ली हिंसा पर राहुल और संजय में छिड़ी महाभारत, एक ने कहा स्मैकिया तो दूसरे ने टिकट ब्लैक करने वाला

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

उत्तर पूर्वी दिल्ली में हिंसा के चलते अब तक 50 लोगों की मौत हो चुकी हैं तो 250 से अधिक लोग घायल हैं, जिनका विभिन्न अस्पतालों में इलाज चल रहा है। दिल्ली हिंसा में 50 मौतों का जिम्मेवार कौन इसको लेकर आरोप-प्रत्यारोप का खेल भी खूब चल रहा है। इसी क्रम में बीजेपी के दिवंगत नेता राहुल महाजान ने दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार पर निशाना साधा और देखते ही देखते ये निशाना सटीक जाकर बैठा और आप की आवाज माने जाने वाले संजय सिंह को लग गया। दरअसल, दिल्ली हिंसा को लेकर राहुल महाजन ने एक ट्वीट किया जिसमें उन्होंने लिखा कि अगली बार वोट देते वक्त जरूर सोचना की 200 यूनिट मुफ्त बिजली के चक्कर में 10 लाख की गाड़ी और 50 का मकान ना जल

जाए। राहुल की ये बात संजय सिंह को नागवार गुजरी और उन्होंने इसका जवाब देने में भाषा की मर्यादा भी लांघ दी। संजय सिंह ने राहुल को टैग करते हुए लिखा कि ये स्वर्गीय प्रमोद महाजन जी के समैकी बेटे हैं कह रहे हैं बिजली पानी फ्री लोगे तो घर मकान जला दिये जायेंगे। संजय ने राहुल पर निशाना साधा तो वो कहां चुप रहने वाले थे सिंह के ट्वीट के चंद मिनटों बाद ही राहुल महाजन ने तीखा पलटवार किया और उनकी तुलना महाभारत के धृतराष्ट्र से कर दी। हर 'धृतराष्ट्र' को एक 'संजय' की जरूरत पड़ती है, और 'संजय' का काम था रणभूमि की सही सही जानकारी धृतराष्ट्र तक पहुंचाना। जब संजय को 'ताहिर हुसैन' ना दिखे, जब संजय को 'अमानतुल्ला' ना दिखे तो, तो धृतराष्ट्र का अनभिज्ञ होना लाजमी है। राहुल महाजन यहीं नहीं रुके उन्होंने एक और ट्वीट करते हुए लिखा कि दोस्तों सुल्तानपुर के शुभम टाकीज में टिकट ब्लैक करने वाले संजय सिंह को जवाब देना ही होगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दंगे के दौरान ताहिर हुसैन ने संजय सिंह, केजरीवाल समेत आम आदमी पार्टी के आलाकमान से 50 से अधिक बार फोन पर बातचीत की। साजिश कितनी गहरी है इससे पर्दा उठे। बहरहाल, दिल्ली हिंसा को लेकर आरोप-प्रत्यारोप के इस दौर में भाषा की मर्यादा दोनों तरफ से ताक पर रख दी गई।

न्यूजीलैंड दौरे पर भारतीय बल्लेबाजों के खराब प्रदर्शन के लिए बैटिंग कोच की जवाबदेही तय की जाए

विजय कुमार की विशेष रिपोर्ट

पिछले दिनों भारतीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड दौरे पर गई थी जिसमें उसने पाँच ट्वंटी-ट्वंटी,तीन वनडे, दो टैस्ट मैचों की सीरिज़ खेली थी जिसमें भारतीय क्रिकेट टीम को विश्व स्तर पर काफी शर्मिदगी झेलनी पड़ी।

इसमें मुख्यत: भारतीय टीम में बैट्समेन का खराब प्रदर्शन रहा जिसके लिए बैटिंग कोच का इस पद को बखूबी से ना संभालना दर्शाता है।

इसमें क्रिकेट जगत के बुद्धिजीवियों ने आईपीएल को भी जिम्मेवार ठहराया है क्योंकि तकनीकी तौर पर सक्षम ना होने के कारण टीम को निराशा हाथ लगी इस कड़ी को सुधारने के लिए भारतीय टीम को अच्छा बैटिंग कोच चाहिए जोकि राजनीति से प्रेरित न हो जैसे कि सचिन तेंदुलकर, रिंकी पोटिंग, ब्रायनलारा, मैथ्यूहेडन, राहुल द्रविड़ जैसे दिग्गज खिलाड़ियों को भारतीय ड्रैसिंग रूम में शामिल करना चाहिए क्योंकि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड दुनिया में सभी अमीर बोर्डों में से एक है और वो इनके खर्चों को झेल सकता है।

अकसर देखा जाता है भारत विदेशी दौरों में डगमगा जाता है उसका कारण भी अनुभवी कोच का न होना। जिसने खुद कुछ ही मैच

भारतीय टीम को अच्छा बैटिंग कोच चाहिए जो की राजनीति से प्रेरित न हो

खेले हो और उसका तुजुर्बा विदेशी विकटों पर बहुत कम हो राजनीतिक पार्टियों को भी चाहिए कि परिवारवाद को बढ़ावा ना दे और खेल बोर्डों को आज़ादी से अपने निर्णय लेने दे नहीं तो नाराज़गी दिल्ली चुनाव के नतीजों जैसी बाकी राज्यों में भी देखने को मिलेगी जिसमें कि प्रमुखत: पंजाब क्योंकि यहां के लोग खेलों के प्रति झुझारू हैं और गलत चीजों को रोकने के लिए हमेशा अग्रसर रहते हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कोरोना पर अलर्ट, होली मिलन समारोह में नही होंगे शामिल

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कोरोना वायरस को लेकर एक बड़ा निर्णय किया है। पीएम मोदी ने कहा है कि वह इस साल किसी भी होली मिलन समारोह में शामिल नहीं होंगे।

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कोरोना वायरस को लेकर एक बड़ा निर्णय किया है। पीएम मोदी ने कहा है कि वह इस साल किसी भी होली मिलन समारोह में शामिल नहीं होंगे। कोरोना वायरस के भारत में आने के बाद केंद्र सरकार मुस्तैद नजर आ रही है। इसको लेकर स्वास्थ्य

मंत्री डॉ. हर्षवर्धन आज दिल्ली के बड़े अस्पतालों के प्रतिनिधियों के साथ एक अहम बैठक की है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी कोरोना वायरस को लेकर एक बड़ा निर्णय किया है। पीएम मोदी ने कहा है कि वह इस साल किसी भी होली मिलन समारोह में शामिल नहीं होंगे। पीएम मोदी ने ट्वीट किया कि दुनियाभर में एक्सपर्ट्स ने सलाह दी है कि भीड़ वाले इलाकों में शामिल होने से बचें, ताकि कोरोना वायरस का असर ना फैल पाए। ऐसे में इस साल मैं किसी भी होली मिलन समारोह में हिस्सा नहीं लूंगा। बता दें कि अभी तक भारत में कोरोना वायरस के 21 मामले पॉजिटिव पाए गए हैं। हाल ही इटली से जो 21 टूरिस्ट भारत आए थे, उसमें से 15 को कोरोना पॉजिटिव पाया गया है। वहीं डॉ हर्षवर्धन ने कैबिनेट बैठक में कोरोना को लेकर तैयारियों पर भी ब्रीफ किया है।

निर्भया केस : दोषी पवन गुप्ता की दया याचिका राष्ट्रपति ने की खारिज

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

निर्भया सामूहिक बलात्कार एवं हत्या मामले के चार दोषियों में से एक पवन कुमार गुप्ता की दया याचिका को राष्ट्रपति राम नाथ कोविंद ने खारिज कर दिया है। दक्षिण दिल्ली में 16 दिसंबर 2012 को एक चलती बस में 23 वर्षीय छात्रा 'निर्भया' से सामूहिक बलात्कार और उसपर बर्बर हमला हुआ था। निर्भया की 29 दिसंबर को उसी साल सिंगापुर के माउंट एलिजाबेथ अस्पताल में मौत हो गई थी। इससे पहले दिल्ली की एक अदालत ने 2012 के निर्भया सामूहिक दुष्कर्म और हत्या मामले में मृत्युदंड पाए चारों दोषियों की फांसी पर अगले आदेश तक रोक लगा दी थी। दोषियों को 3 मार्च को फांसी दी जानी थी।

मुकेश सिंह, विनय शर्मा, अक्षय कुमार सिंह, पवन गुप्ता, राम सिंह और एक किशोर को इस मामले में दोषी पाया गया था। राष्ट्रपति मुकेश, विनय और अक्षय की दया याचिका

मुकेश सिंह, विनय शर्मा, अक्षय कुमार सिंह, पवन गुप्ता, राम सिंह और एक किशोर को इस मामले में दोषी पाया गया था। राष्ट्रपति मुकेश, विनय और अक्षय की दया याचिका अस्वीकार कर चुके हैं। राम सिंह ने जेल में आत्महत्या कर ली थी और किशोर को सजा पूरी करने के बाद रिहा कर दिया गया था।

अस्वीकार कर चुके हैं। राम सिंह ने जेल में आत्महत्या कर ली थी और किशोर को सजा पूरी करने के बाद रिहा कर दिया गया था।

दिल्ली हिंसा: सुप्रीमकोर्ट ने भड़काऊ बयान देने वालों के खिलाफ याचिका पर हाईकोर्ट में तेज सुनवाई के लिए कहा, याचिकाकर्ता खुद ऐसे बयान के लिये फंसे

■ नई दिल्ली/न्यूज नेटवर्क

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली हाई कोर्ट से कहा है कि वह दिल्ली में हुए दंगों से पहले भड़काऊ बयान देने वाले लोगों के खिलाफ दायर याचिका पर सुनवाई में तेजी लाए। हाई कोर्ट अब शुक्रवार को इस मामले की सुनवाई करेगा। उधर इस तरह के बयान की शिकायत करने वाले सामाजिक कार्यकर्ता हर्ष मंदर खुद आज अपने एक बयान पर फंसते हुए नजर आए. कोर्ट ने इस पर संज्ञान लेते हुए उनसे जवाब मांग लिया है। सुप्रीम कोर्ट में हर्ष मंदर और 10 दंगा पीड़ितों की याचिका सुनवाई के लिए लगी थी। इन लोगों ने बीजेपी नेताओं कपिल मिश्रा, अनुराग ठाकुर और प्रवेश वर्मा पर एफआईआर दर्ज करने की मांग की थी. उनका यह भी कहना था कि हाई कोर्ट ने उनकी मांग पर जवाब देने के लिए दिल्ली पुलिस को लंबा समय दे दिया है. सुनवाई अप्रैल तक के लिए टाल दी है। इसलिए सुप्रीम कोर्ट मामले पर सुनवाई करे।

जनरल तुषार मेहता ने हर्ष मंदर का एक बयान कोर्ट के सामने रखा

चीफ जस्टिस की अध्यक्षता वाली बेंच में सुनवाई शुरू होने से पहले ही दिल्ली पुलिस के लिए पेश सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने हर्ष मंदर का एक बयान कोर्ट के सामने रख दिया। इस बयान में हर्ष मंदर सीएए विरोधियों से यह कह रहे हैं कि उन्हें सुप्रीम कोर्ट और संसद पर भरोसा नहीं करना चाहिए। इंसाफ सड़क पर आने से ही मिलेगा। सॉलिसिटर जनरल का कहना था कि यहां याचिका करने वाला व्यक्ति खुद लोगों को भड़का रहा है। जो न्यायपालिका के बारे में ऐसी सोच रखता हो, उसकी याचिका पर सुनवाई नहीं होनी चाहिए।

इस पर चीफ जस्टिस एस ए बोबडे ने कहा, हम आज हर्ष मंदर के वकील की बात नहीं सुनेंगे। लेकिन दंगा पीड़ितों के वकील अपनी बात रख सकते हैं। इसके बाद दंगा पीड़ितों के वकील कॉलिन गोंजाल्विस ने

अपनी बात शुरू की। उन्होंने कहा, अनुराग ठाकुर जैसे नेताओं ने गद्दारों को गोली मारो वाला नारा लगाया। जनवरी में ही उनके गिरफ्तारी हो गई होती तो दिल्ली में हिंसा नहीं भड़कती। सॉलिसिटर जनरल ने इस पर दखल देते हुए कहा,कॉलिन गोंजाल्विस दिल्ली हाई कोर्ट में हर्ष मंदर के वकील है। यहां उन्होंने दूसरे लोगों के नाम पर वही याचिका दाखिल कर दी है। कोर्ट को इनकी बात भी नहीं सुनी चाहिए। वैसे भी हर्ष मंदर जैसे लोग सिर्फ एक तबके के नेताओं के किसी गिरफ्तारी चाहते हैं। हम जिम्मेदारी से काम ले रहे हैं। शांति बहाली पर जोर दे रहे हैं। सभी पक्षों के बयानों को सुना जाएगा और बाद में जरूर कार्रवाई की जाएगी।

इस पर गोंजाल्विस ने एक बार फिर बीजेपी नेताओं की तुरंत गिरफ्तारी की मांग उठाई। चीफ जस्टिस ने उन्हें रोकते हुए कहा, आप कह रहे हैं कि नेताओं की तुरंत गिरफ्तारी कर ली जाती तो हिंसा नहीं भड़कती। लेकिन कई बार ऐसा भी होता है कि नेताओं की गिरफ्तारी के बाद ही हिंसा भड़कती है। 1993 में मुंबई में शाखा प्रमुखों की गिरफ्तारी हुई जिसके बाद दंगा हुआ. कई बार पुलिस प्रशासन हालात के हिसाब से फैसले लेता है।

सॉलिसिटर जनरल ने एक बार फिर हर्ष मंदर पर हमला बोलते हुए कहा, यह जिस तबके की नुमाइंदगी करते हैं, वह स्वास्तिक जैसे पवित्र धार्मिक प्रतीक का अपमान करता है। यह लोग खुद भीड़ को भड़काते हैं। बाद में सिर्फ एक पक्ष के खिलाफ याचिका दाखिल कर देते हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली दंगों से पहले भड़काऊ बयान देने वाले लोगों का मामला हाई कोर्ट को वापस भेजा

चीफ जस्टिस ने उन्हें रोकते हुए कहा, जिस मामले को हाई कोर्ट अभी देख रहा है, हम उस पर कोई आदेश नहीं देना चाहते हैं। लेकिन इनका कहना है कि हाईकोर्ट को सुनवाई अप्रैल तक नहीं टालनी चाहिए थी।

गलती तो हो गई... गलती करने वालों को दंडित कौन करेगा ?

■ जालंधर से विजय कुमार की विशेष रिपोर्ट

जालंधर ब्रीज द्वारा अपने पिछले अंकों में नैशनल हाईवे और ठेका प्राप्त कंपनियों की मिलीभगत को बड़े जोर-शोर से आवाज को अपने समाचार पत्र के माध्यम से बुंलद किया जिसके परिणामस्वरूप एक के बाद एक द्वारका और दिल्ली ट्रांसपोर्ट भवन में बैठे मिनीस्टर के चेले चौपाटे और उच्चाधिकारियों को कुंभकर्णा नींद से जागकर जालंधर का दौरा करने पर मजबूर होना पड़ा परंतु आश्चर्यजनक बात अभी भी यह है कि सीनियर लैवल के अधिकारी का दौरे पर आना और यह कहना कि जो गलती हुई उसका हल करवाकर फिर जिम्मेवार अधिकारियों पर क्या कार्रवाई करनी है उसके बारे में विचार-विमर्श करेंगे और इससे भी हैरानी वाली बात सामने आई कि जालंधर के डिप्टी कमीशनर ना पुलिस कमीशनर द्वारा हाईवे में की गई नालायकियों के कारण दुर्घटनाग्रस्त लोगों के मुआवजे की माँग और न ही जो इस हाईवे की त्रुटीयों के कारण परलोक सुधार गए उनके लिए विशेष माँग की गई।

इस मीटिंग ने जालंधर निवासियों को ओर चिढ़ाने का काम किया कि जो पैसा पहले बर्बाद किया गया है उसके लिए उसी समय कोई इनक्वारी क्यों नहीं लगाई परन्तु दोबारा नए सिरे से नई योजनाऐं बनाने के लिए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दे दिए है और लोगों के खून पसीने की कमाई से दिए गए टैक्स को नए सिरे से ठेका देकर नई कंपनी को लाकर महंगे दाम पर लूटने का मौका दिया जाएगा और इस काम की कोई समय सीमा नहीं बताई गई। इसको 15 दिन भी लग सकते है और दो साल भी

लोगों के खून पसीने की कमाई से दिए गए टैक्स को नए सिरे से ठेका देकर नई कंपनी को लाकर महंगे दाम पर लूटने का मौका दिया जाएगा और इस काम की कोई समय सीमा नहीं बताई गई इसको 15 दिन भी लग सकते है और दो साल भी लग सकते या इस से ज्यादा भी

लग सकते या इस से ज्यादा भी शायद लोगों को इस जन्म में जालंधर से अमृतसर जाने के लिए यह पुल नसीब न हो यह सारे ब्यान तो हिंदी की कहावत है रस्सी जल गई पर बल नहीं गया और जो सरकारी खजाने पर इन अधिकारियों के निरीक्षण पर उनको दिए जाने वाले भत्तों का भारी भरकम बोझ पड़ा उसके लिए उत्तरदायी कौन है ?

साप्ताहिक
5 से 11 मार्च 2020
जालंधर ब्रीज
www.jalandharbreeze.com

अविरल

निर्धन दो प्रकार के होते हैं एक निर्धन वह होता है, जिसके पास पैसा नहीं होता, तो दूसरा वह होता है, जिसका कोई शुभचिंतक नहीं होताँ दूसरे प्रकार का निर्धन ही असली निर्धन हैं

■ बिनोवा भावे

दखल

अंधविश्वास का बढ़ता जाल

धर्म के बढ़ते व्यवसायीकरण ने इसे बाजार का ऐसा बिकाऊ माल बना दिया है जिसमें लागत लगभग शून्य और कमाई लाखों-करोड़ों में है। आज बहुत सारे कथित बाबाओं, मुल्लाओं, धर्मगुरुओं और उनके चेलों के लिए यह मोटी कमाई का जरिया बन चुका है। ये लोग येन-केन-प्रकारेण आम लोगों को मूर्ख बना कर लूटने में लगे हैं। हमें इस गहरी साजिश को समझने के साथ-साथ मन के भटकाव को भी रोकना होगा।

बीते दो-ढाई दशकों में हमारे समाज में कट्टर धार्मिक गतिविधियों ने पैठ बनाई है। विभिन्न धार्मिक प्रक्रमों जैसे पूजा-पाठ, व्रत-त्योहार, धार्मिक यात्राएं, प्रवचन, धर्म प्रचार आदि में हर आम और खास बढ़-चढ़ कर भागीदारी निभाने लगा है। समाज के हर स्तर के लोगों के लिए उनके आर्थिक, सामाजिक और बौद्धिक स्तर को ध्यान में रखते हुए धार्मिक समूहों का निर्माण हो रहा है। आए दिन कथित धर्माचार्यों के नेतृत्व में मजलिसें, जलसे सहित तमाम प्रकार के धार्मिक आयोजन हो रहे हैं और लगभग सभी में लोगों की उमड़ती भीड़ ऐसे आयोजनों की राह को ज्यादा प्रखर और मुखर बना रही है। यह स्थिति समाज के हर वर्ग और कमोबेश सभी धर्मों में समान रूप से बढ़ी है। प्रश्न उठता है कि आखिर इस बढ़ती कट्टर धार्मिकता और अंधविश्वास के क्या कारण हैं? क्यों लोग अपनी सहज जीवन शैली को छोड़ कर असहजता को अपनाते जा रहे हैं? आज के इस वैज्ञानिक युग में लोग सुबह उठने से लेकर रात में सोने तक घर, बाहर, दफ्तर, बाजार हर तरफ आधुनिक वैज्ञानिक संसाधनों का धड़ल्ले से उपयोग कर अपने जीवन के नवीनीकरण का दावा कर रहे हैं, तो दूसरी ओर पुरानी परंपराओं और रीति-रिवाजों को तोड़ कर उनके स्थान पर अपने मनमाफिक नियमों को भी अपना रहे हैं।

अपनी आधुनिकता का प्रदर्शन वे पहनावे, रहन-सहन, विचारों की प्रस्तुति से लेकर हर चीज में कर रहे हैं। मगर बात जैसे ही धार्मिक विषयों की होती है तो लोग पहले से ज्यादा परंपरागत और कठोर दिखने लगते हैं। बड़े-बड़े पदों पर बैठा और बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल किया व्यक्ति भी आसानी से संकीर्ण धार्मिकता के चोले को धारण कर ले रहा है। वैसे लोग अपने आप को सही सिद्ध करने के लिए बनावटी प्रकरणों, तर्कों और उदाहरणों का सहारा लेकर आसानी से दूसरों को प्रभावित भी कर रहें हैं। बदलाव की इन वजहों को खोजने के लिए आवश्यक है कि हम बीते वर्षों के दौरान समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे घरेलू, व्यावसायिक, शैक्षणिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि में आए परिवर्तनों पर गौर करें। युवा होते 21वीं सदी के इस दौर का भारत आधुनिकता, परंपरा के संक्रमण काल से गुजर रहा है।

बढ़ता व्यक्तिवाद, भोगवाद, सब-कुछ एक साथ पा लेने की चाह, नित नए होने वाले अन्वेषण, वैश्वीकरण, टूटती सामाजिक और पारिवारिक वर्जनाओं आदि ने मनुष्य को एक तरफ नया करने और नया पाने का स्वप्न दिखाया है, तो दूसरी तरफ उसमें असफलता का डर भी बैठाया है। इसी डर ने उसे धार्मिक कर्मकांडों के और करीब किया है। एक तरफ ऐसे लोग हैं जो कार्यक्षेत्र में सफल हैं, वे अपनी सफलता को बचाए, बनाए रखने और ज्यादा से ज्यादा ऊंचाइयों को छूने के लिए कर्म के साथ-साथ पूजा-पाठ आदि को भी तरजीह देने लगे हैं। दूसरी तरफ वे लोग भी हैं जो सिर्फ इन्हीं रास्तों पर चल कर सफलता की तलाश में लगे है। अत्यधिक व्यस्तता, एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़, मित्रों, रिश्तेदारों से बढ़ती दूरी, कृत्रिम और बनावटी माहौल आदि ने भी लोगों के जीवन की सहजता और मानसिक शांति को भंग कर दिया है। ऐसे में वे सुकून की तलाश में इन राहों पर बढ़ने लगे हैं। दूसरी महत्वपूर्ण बात है, आजादी से लेकर अब-तक विभिन्न राजनीतिक दलों ने विचारों और नीतियों से अलग-अलग समय पर अलग-अलग विचारधारा और धर्मों से जुड़े लोगों के बीच उनके धर्म और पहचान को लेकर असुरक्षा की भावना को बढ़ाया है। इस असुरक्षा ने उन्हें और कट्टर तथा धर्मभीरू बना दिया है। इसी ने धर्म को व्यक्तिगत भावनाओं से निकाल कर सड़कों और चौराहों का विषय बना दिया है। हजारों वर्ष पूर्व भारत पर पहला विदेशी आक्रमण करने वाले ईरान के हखामनी साम्राज्य के शासकों से लेकर अंग्रेजों के भारत आक्रमण तक सैकड़ों विदेशी आक्रमणकारी इस 'सोने की चिड़िया' रूपी देश पर कब्जा जमाने, यहां से संपत्ति लूट कर ले जाने का कृत्य कर चुके हैं। उनमें से कुछ सफल हुए, कुछ असफल।

कुछ अपने लक्ष्य की पूर्ति कर यहां से चले गए, तो कुछ इस जमीं की सहजता, सौम्यता और सौंदर्य के मोहपाश में बंध कर यहीं के हो गए। अलग-अलग धर्मों के प्रचारकों ने भी विभिन्न तरीकों से भारतीय लोगों को अपने धर्मों में दीक्षित करने का कार्य व्यापकता के साथ किया। फलतः भारत भूमि विविध धर्मों और विविध जातीय बनती गई। एक तरफ हमें इस बहुलता के ढेरों फायदे मिले, तो दूसरी तरफ इससे हमारे सामाजिक ताने-बाने को चोट पहुंचने का भी खतरा बना रहा है। अंग्रेजों ने अपने शासनकाल के दौरान बार-बार इसे एक घातक हथियार के रूप में प्रयोग किया और लगभग वही काम आजादी के बाद से लेकर अब-तक विभिन्न राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय राजनीतिक पार्टियां कुछ खास तबकों के तुष्टीकरण और सामाजिक समरसता को तोड़ कर अपने पक्ष में जनमत तैयार करने और देश को बांटने के लिए कर रही हैं। राजनीतिक दलों ने लोगों के मन और देहरियों के भीतर विराजमान ईश्वर-अल्लाह को वोट की मशीन के रूप में बदल दिया है। फलस्वरूप देश का आम आदमी पहले से और ज्यादा ध्रुवीकृत और अपने कथित धार्मिक खूंटे से बंधता जा रहा है।

धर्म के बढ़ते व्यवसायीकरण ने इसे बाजार का ऐसा बिकाऊ माल बना दिया है जिसमें लागत शून्य और कमाई लाखों-करोड़ों में है। आज बहुत सारे कथित बाबाओं, मुल्लाओं, धर्मगुरुओं और उनके चेलों के लिए यह मोटी कमाई का जरिया बन चुका है। ये लोग येन-केन-प्रकारेण आम लोगों को मूर्ख बना कर लूटने में लगे हैं। सैकड़ों वर्षों की विदेशी दासता ने भारत को आर्थिक और सामाजिक रूप से जर्जर करने के साथ-साथ भारतीयों को मानसिक रूप से भी खोखला कर दिया था। गरीबी, प्राकृतिक आपदाओं की मार, अशिक्षा, खराब कृषि एवं औद्योगिक व्यवस्था ने लोगों को धर्मभीरू और कमजोर बनाने के साथ-साथ उन्हें उनके कर्म से भी दूर किया। वे अपने तमाम कष्टों और व्याधियों का इलाज धार्मिक कर्मकांडों, ओझा, पंडितों और मुल्लाओं के द्वारा ढूंढने लगे। पिछले जन्म के कर्मों और दुर्भाग्य जैसे प्रपंचपूर्ण शब्दाडंबरों में फंसने लगे। आजादी के दौरान और उसके बाद के वर्षों में लगातार किए गए सामाजिक उत्थान के कार्यों के फलस्वरूप हम बहुत हद तक इन प्रपंचों से बाहर निकल चुके थे। पर बीते दो-ढाई दशकों में धर्म के घातक व्यवसायीकरण का जाल पूरी व्यवस्था को अपने आगोश में लेने को आतुर दिखने लगा है। इसने अपना स्वरूप इस प्रकार गढ़ लिया है कि समाज का सक्षम, पढ़ा-लिखा और सामान्य अनपढ़ वर्ग सभी इसके आगोश में समाते दिख रहे हैं।

देश के आम आदमी के जीवन में इस हद तक धर्मभीरूता और कट्टरता का समावेश भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए घातक है। अंतराष्ट्रीय पत्रिका 'साइंस एड्वांसेज' में पिछले दिनों छपी एक रिपोर्ट के अनुसार, जो समाज या देश जितना धर्मनिरपेक्ष होता है, वहां आर्थिक विकास की गति उतनी ही तेज होती है। रिपोर्ट बताती है कि धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक संपन्नता में यद्यपि कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं है, परंतु समाज में सहिष्णुता आती है, आर्थिक गतिविधियों में ज्यादा से ज्यादा आबादी की हिस्सेदारी बढ़ती है और इससे विकास दर भी बढ़ती है। अब बढ़ती कट्टर धार्मिकता और अंधविश्वास का कॉकटेल पूरी सामाजिक व्यवस्था के लिए घातक है। यह तेजी से विकसित होते भारत के जड़ में मट्ठा डालने का काम कर रहा है।

■ **संगीता सहाय**
(वरिष्ठ पत्रकार)

विचार

मोदी ने फिर देश को चौंकाया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्वीट ने पूरे देश को चौंका कर रख दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया छोड़ने का एलान कर दिया है। इसके बाद से ही सोशल मीडिया पर अटकलों का बाजार गर्म हो गया है। अब सच क्या है, वे क्या करने वाले हैं यह रविवार को पता चलेगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ट्वीट ने पूरे देश को चौंका कर रख दिया है। उन्होंने सोशल मीडिया छोड़ने का एलान कर दिया है। इसके बाद से ही सोशल मीडिया पर अटकलों का बाजार गर्म है। पीएम मोदी को फैसला वापस लेने का निवेदन लिए कई हैशटैग भी ट्रेंड करने में लगे हुए हैं। यही नहीं 'नो सर' जैसे हैशटैग भी चल रहे हैं। हर कोई यही जानना चाहता है कि आखिर क्यों प्रधानमंत्री मोदी सोशल मीडिया छोड़ना चाहते हैं। मगर इसका जवाब जानने के लिए देश को रविवार तक का इंतजार करना होगा। तब प्रधानमंत्री मोदी खुद ही इस पर स्थिति साफ कर पाएंगे। मगर अलग-अलग तरह की अटकलें जारी हैं। ऐसे भी कयास हैं कि परीक्षा के दौरान छात्रों को सोशल मीडिया से दूर रखने के लिए प्रधानमंत्री ने ऐसी बात कही है। कहा जा रहा है कि दिल्ली में हुई हिंसा से पीएम नरेंद्र मोदी आहत हैं। 26 फरवरी को उन्होंने ट्वीट कर शांति की अपील की थी। मगर रविवार को दिल्ली में सोशल मीडिया के जरिए फैली अफवाह से काफी परेशानी हुई। यह भी माना जा रहा है कि पीएम मोदी इसके जरिए समाज को संदेश देना चाहते हैं। सोशल मीडिया के आने के बाद लोगों ने मिलना जुलना बंद कर दिया है। ऐसे में अवसाद और अकेलापन भी बढ़ रहा है।

जो भी हो मोदी का ऐलान बेहद चौंकाने वाली खबर तो है। सोशल मीडिया पर दुनिया के लोकप्रिय नेताओं में से एक पीएम मोदी की राजनीतिक सफलता में भी इसका बड़ा योगदान बताया जाता है। पीएम मोदी कई बार लोकतंत्र की मजबूती में सोशल मीडिया के योगदान की सराहना कर चुके हैं। उन्होंने दुनिया के सभी नेताओं से अपील की थी कि वे सोशल मीडिया से जुड़ें। हालांकि, करीब पांच महीने पहले पीएम मोदी ने एक कार्यक्रम में सोशल मीडिया के दुरुपयोग को लेकर चिंता भी चाहिर की थी। सवाल यह है क्या मोदी ने भविष्य को लेकर तब कोई हिंट दिया था? पीएम मोदी ने सितंबर 2019 में एक कार्यक्रम में सोशल मीडिया की ताकत और लोकतंत्र में इसके योगदान की सराहना करने के साथ ही इसके दुरुपयोग पर चिंता जाहिर की थी। उन्होंने कहा, सोशल मीडिया ने सशक्तिकरण के लिए बहुत ताकत दी है। मैं लोकतंत्र के लिए सोशल मीडिया को एक बहुत बड़े टूल के रूप में देखता हूं, लेकिन दुर्भाग्य से संगठित रूप से नकारात्मक चीजों को फैलाने का प्रयास किया जाता है।

पीएम ने पहले भी कुछ समय के लिए डिजिटल उपवास रखने की बातें कह चुके हैं। इसमें कुछ समय के लिए फोन और सोशल मीडिया से दूर रहना होता है। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि क्या पीएम भी कुछ दिन डिजिटल उपवास पर जाएंगे। पीएम मोदी ने रविवार यानी 8 मार्च को सोशल मीडिया छोड़ने के संकेत दिए हैं। इस दिन अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस है। ऐसी भी चर्चाएं हैं कि इस दिन कोई महिला पीएम का सोशल मीडिया अकाउंट चलाए। हालांकि यह अभी कयासबाजी ही हैं। असली बात तो पीएम मोदी जब खुद इस बारे में घोषणा करेंगे।

शिक्षित नारी समृद्ध भारत की कुंजी

आज वक्त महिला और पुरुष में भेद नहीं करता। महिलाएं हर वह काम कर रही हैं, जिस पर पुरुषों का अधिपत्य था। मगर अब भी कई समाजों में महिलाओं को वह सम्मान हासिल नहीं हो पाया है जिसकी वे हकदार हैं। लिहाजा, अब महिलाओं को उनका हक देने के प्रति जिम्मेदार होना पड़ेगा और इस बात पर चिंतन करना होगा कि आखिर क्या वजह है कि हम महिलाओं के लायक समाज का निर्माण क्यों नहीं कर पा रहे हैं।

सौभाग्य से विश्व के वृहद्तम शिक्षा तंत्रों में से एक का पारिवारिक सदस्य होने के नाते मुझे संपूर्ण देश की शिक्षण संस्थाओं के दीक्षांत समारोहों में जाने का अवसर मिलता रहता है। एक रुझान स्पष्ट रूप से सामने आता है कि हर क्षेत्र में हमारी बेटियां सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रही हैं। बात डिग्रियों की हो, या फिर स्वर्ण पदक विजेताओं का विषय हो, यह औसतन साठ प्रतिशत से अधिक हमारी बेटियों का होता है। कहीं-कहीं तो यह 70-75 प्रतिशत से अधिक हो जाता है। मैं इसे एक अत्यंत शुभ संकेत के रूप में देखता हूं। वस्तुतः विश्व के विकसित राष्ट्रों ने गौरवमयी स्थान अपने देश की महिलाओं को समुचित आदर प्रदान करके ही हासिल किया है। संपूर्ण विश्व आठ मार्च को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाने जा रहा है। राष्ट्र के निर्माण और विकास में स्त्रियों की एक महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए स्वामी विवेकानंद ने नारी को पुरुष के समकक्ष बताते हुए कहा था, जिस देश में नारी का सम्मान नहीं होता, वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता।

हमारे देश में वेदांत ने स्पष्ट घोषणा की है कि सभी प्राणियों में एक समान आत्मा विराजमान है। इस नाते स्त्रियों और पुरुषों में कोई भी भेद संभव नहीं है। मेरा सदैव से यह मानना रहा है कि पुरुष का संपूर्ण जीवन नारी पर आधारित रहता है। कोई भी पुरुष अगर सफल है, तो उस सफलता का आधार नारी ही है। वैसे भी देखा जाए तो जब कोई शिशु इस संसार में आता है, तो किशोरावस्था तक प्रथम गुरु के रूप में मां से उसका सबसे अधिक संसर्ग होता है। यही कारण है कि स्त्री शिक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण है। समाज को संस्कारवान बनाने के लिए महिला शिक्षा उपयोगी ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है। किसी भी सभ्य, विकसित और श्रेष्ठ समाज का निर्माण उस देश के शिक्षित नागरिकों द्वारा किया जाता है और नारी इस कड़ी का केवल महत्वपूर्ण आधार ही नहीं, बल्कि अनिवार्य शर्त है। जिस तरह एक-एक कोशिका मिलकर जीवन का निर्माण करती है, वैसे ही प्रत्येक परिवार की छोटी-छोटी इकाइयां मिलकर समाज का निर्माण करती हैं।

सभी इकाइयों की ऊर्जा का स्रोत और सम्पूर्ण परिवार की केंद्र बिंदु नारी होती है। यदि नारी शिक्षित होती है, तो दो परिवार शिक्षित होते हैं और जब परिवार शिक्षित होता है, तो पूरा राष्ट्र शिक्षित होता है। यही कारण था कि महान विचारक रूसो कहते थे, 'आप मुझे सौ आदर्श माताएं दें, तो मैं आपको एक आदर्श राष्ट्र दूंगा।' अजर-अमर भारतीय संस्कृति से हमें नारी को अत्यंत सम्मान देने की ही प्रेरणा मिलती है। हमारी संस्कृति हमें सिखाती है, यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता अर्थात् जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। माता के रूप में नारी धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानी जननी। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है। स्वयं ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है। चाहे भगवान राम रहे हों, गणेश, कार्तिकेय हों, कृष्ण हों या गुरुनानक हों, सदैव मां के रूप में कौशल्या, पार्वती, यशोदा और तृप्ता देवी की आवश्यकता पड़ती है। मैं कई बार सोचता हूं कि आज समाज में विभिन्न प्रकार की चुनौतियां यक्ष प्रश्न बनकर हमारे सम्मुख खड़ी हैं, ऐसे में नई पीढ़ी को इस बारे में आत्मावलोकन करने की आवश्यकता है कि कैसे संस्कार देने में कमी रह गई है जिस कारण समाज में विकृतियां आ रही हैं।

वैदिक काल की बात करें तो घोषा, लोपामुद्रा, सुलभा, मैत्रेयी और गार्गी जैसी विदुषियों ने बौद्धिक और आध्यात्मिक पराकाष्ठा के नए आयाम स्थापित किए। नई शिक्षा नीति में हमारा पूरा ध्यान इस बात पर केंद्रित है कि हमारी बलिकाएं कहीं भी पीछे नहीं रहें। बच्चे सबसे अधिक माताओं के संपर्क में रहा करते हैं। माताओं के संस्कारों, व्यवहारों व शिक्षा का प्रभाव बच्चों के मन मस्तिष्क पर सबसे अधिक पड़ता है। शिक्षित माता ही बच्चों के कोमल व उर्वर मन मस्तिष्क में उन समस्त संस्कारों के बीज बो सकती है, जो समाज और राष्ट्र के उत्थान के लिए परम आवश्यक हैं। शिक्षित और विकसित मन मस्तिष्क वाली नारी अपनी परिस्थिति और परिवार के प्रत्येक सदस्य की आवश्यकता आदि का ध्यान रखकर घर की उचित व्यवस्था एवं संचालन कर सकती है। जीवन रूपी गाड़ी चलाने के लिए महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सशक्त भागीदारी के लिए महिला शिक्षा की अत्यन्त आवश्यकता है। यदि नारी अशिक्षित हो, तो वह अपने जीवन को विश्व की गति के अनुकूल बनाने में सदा असमर्थ रहेगी। यदि वह शिक्षित हो जाए, तो न सिर्फ उसका पारिवारिक जीवन स्वर्गमय होगा, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति के युग का सूत्रपात भी हो सकेगा। भारतीय समाज में शिक्षित माता, गुरु से भी बढ़कर मानी जाती है, क्योंकि वह अपने बच्चों को महान से महान बना सकती है।

भारत में नारी और पुरुष के बीच जब-जब फर्क आया, तब-तब उस फर्क की बड़ी कीमत हमें चुकानी पड़ी। वास्तव में गंभीरता के साथ देखा जाए, तो यही ज्ञात होता है कि भारत की समस्याओं का एक प्रमुख कारण नारियों की अशिक्षा रहा है। इसका फल यह हुआ कि जो राष्ट्र विश्व गुरु था, वही आज अपना पुराना वैभव, गौरव पाने हेतु संघर्षरत है। भारत सरकार हमारी बेटियों के कल्याण के लिए कृत संकल्प है। महिला सशक्तीकरण के लिए कई सारी योजनाएं चलाई गई हैं। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, महिला हेल्पलाइन योजना, उज्ज्वला योजना, सपोर्ट टू ट्रेनिंग एंड एम्प्लॉयमेंट प्रोग्राम फॉर वूमेन; वन स्टॉप महिला शक्ति केंद्र, पंचायती राज योजनाओं में महिलाओं के लिए प्रतिनिधित्व देकर सरकार ने महिला सशक्तीकरण एवं विकास की एक नई इबारत लिखने की कोशिश की है। महिला शिक्षा हमारे राष्ट्र की सफलता एवं विकास की सीढ़ी है। महिला शिक्षा प्रत्येक परिवार, समाज, राष्ट्र के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए न केवल महत्वपूर्ण है, बल्कि परम आवश्यक है।

महिला शिक्षा एक ऐसा सक्षम शस्त्र है, जो दुनिया को बदलने की क्षमता रखता है। नव भारत के निर्माण का नया अध्याय लिखने के लिए यह आवश्यक है कि हमारी प्रत्येक बेटी पढ़े और इस कुशलता से पढ़े कि वह वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सके। बेटियों को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी सफल बनाने की मुहिम में सरकार पूरी तत्परता से उनके साथ है। इसमें कोई संदेह नहीं कि नव भारत के सामाजिक-आर्थिक विकास में महिला शिक्षा एक सक्षम उत्प्रेरक की भूमिका निभा सकती है।

मगर अब महिलाओं को लेकर अब समाज का दायरा बदलता जा रहा है। समाज में महिलाओं के साथ हो रही हिंसा, बलात्कार की घटनाओं ने सभी को सोचने पर मजबूर कर दिया है। महिलाओं को तो हम संस्कारी होने की सलाह देते हैं, मगर पुरुषों से लक्ष्मण रेखा में रहने को नहीं कहते। यह हमारी सोच का नतीजा है। आज वक्त महिला और पुरुष में भेद नहीं करता। महिलाएं हर वह काम कर रही हैं, जिस पर एक समय पुरुषों का अधिपत्य था। महिलाएं कई मोर्चों पर पुरुषों से आगे हैं। मगर अब भी कई समाजों में महिलाओं को वह सम्मान और अधिकार हासिल नहीं हो पाया है जिसकी वे हकदार हैं। लिहाजा, अब हमें महिलाओं को उनका हक देने के प्रति जिम्मेदार होना पड़ेगा और इस बात पर चिंतन करना होगा कि आखिर क्या वजह है कि हम महिलाओं के लायक समाज का निर्माण क्यों नहीं कर पा रहे हैं। इस अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर हमें महिलाओं के सम्मान का प्रण लेना होगा और उन्हें उनके अधिकार देने होंगे।

■ **रमेश पोखरियाल निशंक**
(मानव संसाधन विकास मंत्री)

ट्विटर

अगर उन्हें दिल्ली दंगों का दुख है तो सोशल मीडिया नहीं प्रधानमंत्री का पद छोड़ना चाहिए। मोदी ऐसा मौजूदा मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए कर रहे हों, यह सही नहीं है।

अधीर रंजन चौधरी, नेता प्रतिपक्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बाद भक्तों ने सोशल मीडिया को छोड़ने में उनका अनुसरण किया तो देश शांतिपूर्ण हो जाएगा। पीएम मोदी का फैसला देशहित में होगा।

नवाब मलिक, मंत्री महाराष्ट्र सरकार

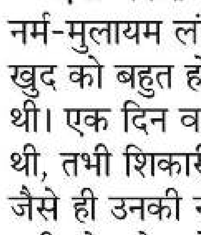

सत्यार्थ

दीर्घकालीन लाभ ही बेहतर

एक बकरी के सारे शरीर पर नर्म-मुलायम लंबे बाल थे। वह खुद को बहुत होशियार समझती थी। एक दिन वह घास चर रही थी, तभी शिकारी वहां आ पहुंचे। जैसे ही उनकी नजर बकरी पर पड़ी, वे उसे पाने के लिए लालायित हो उठे। शिकारियों का इरादा भांपकर बकरी जान बचाने के लिए भागने लगी। भागते-भागते वह एक ऐसी जगह पहुंची, जहां नर्म पत्तों वाली कुछ घनी झाड़ियां लगी हुई थीं। बकरी उनके पीछे जाकर छिप गई। थोड़ी देर में शिकारी भी पीछा करते हुए वहीं आ पहुंचे, लेकिन वे झाड़ियों के कारण बकरी को देख नहीं पा रहे थे। इधर-उधर खोजने के बाद वे आगे बढ़ गए। यह देख बकरी अपनी चतुराई पर बहुत खुश हुई। कुछ देर पहले तक डर की वजह से उसका ध्यान झाड़ियों की बेलों के नर्म पत्तों की ओर गया ही नहीं था और अब जब डर जाता रहा, तो उसने तेजी से उन्हें खाना शुरू कर दिया। कुछ ही देर में उसने काफी सारी झाड़ी चट कर डाली कि तभी शिकारी भी उसे खोजते हुए वापस उसी जगह आ पहुंचे। उन्होंने घेरकर बकरी को पकड़ लिया। वे उसे अपने साथ ले जाते हुए बात कर रहे थे कि यदि बकरी ने झाड़ियां साफ न कर दी होतीं, तो शायद वह उनकी पकड़ में ही नहीं आती। यह सुनकर बकरी को अपनी भूल समझ में आ गई। उसने खुद अपने हाथों से अपना आश्रय मिटा दिया। इसी प्रकार सफलता के नशे में कई बार प्राणी अपने आश्रयदाता को छोटा समझ उसकी उपेक्षा करने या उसे नुकसान पहुंचाने से भी गुरेज नहीं करते। जो लोग इस तरह की चतुराई दिखाते हैं, वे अपने जीवन में कभी-कभी बड़ा धोखा खा जाते हैं। समझदारी तो इसी में है कि फौरी लाभ नहीं, बल्कि दीर्घकालीन लाभ की सोच हो।

■ **सुभाष बुड़ावनवाला**

मुंबई की बहनों का आविष्कार ब्लू सिग्नल लाइट से कम होगा प्रदूषण, बचेगा फ्यूल

ट्रैफिक सिग्नल्स पर रेड लाइट होने के बाद लोग अपनी गाड़ियां बंद नहीं करते और हरी बत्ती होने का इंतजार करते हैं। इस दौरान गाड़ियों का फ्यूल बेकार जलता ही है और गाड़ियों से निकलने वाले धुएं से प्रदूषण में बढ़ोतरी होती है। ऐसे में फ्यूल और पर्यावरण बचाने की कोशिश के मद्देनजर घाटकोपर की रहने वाली दो बहनों ने एक नायाब तरीका खोज निकाला है।

शिवानी खोट और उनकी बहन ईशा खोट ने एक नीले रंग की ट्रैफिक लाइट बनाई है, जो न सिर्फ पलूशन कम करने में मदद करेगी, बल्कि फ्यूल भी बचाएगी। यह ब्लू ट्रैफिक लाइट सिग्नल पर लाल बत्ती होने के 10 सेकंड बाद ब्लिंक करना शुरू कर देगी और लाल बत्ती बंद होने से 10 सेकंड पहले बंद हो जाएगी। यह गाड़ियों के मालिकों और ड्राइवर्स के लिए एक संकेत होगा, जिसकी मदद से वह लाल बत्ती के दौरान अपनी गाड़ियां बंद रखेंगे। इससे न सिर्फ फ्यूल की बचत होगी, बल्कि पलूशन भी कम होगा।

लोगों ने दी सकारात्मक प्रतिक्रिया

ब्लू ट्रैफिक लाइट बनाने वाली शिवानी खोट ने बताया कि मौजूदा समय में वायु प्रदूषण जिंदगी के लिए बड़ा खतरा बन गया है। ऐसे में ब्लू लाइट का कॉन्सेप्ट पलूशन को कम करने में मददगार साबित होगा। हर सिग्नल पर ब्लू लाइट लगाने की लागत तकरीबन 8 हजार रुपए होगी, लेकिन इम्पॉर्टेंट ये है कि इससे हम रोजाना सिग्नल पर जलने वाले फ्यूल की बचत कर सकेंगे। साथ ही प्रदूषण पर नियंत्रण हासिल करने में भी यह मदद करेगा। उन्होंने बताया कि जब लोगों को इस नए ब्लू लाइट के बारे में बताया गया तो सभी ने सकारात्मक प्रतिक्रियाएं दीं।

सिग्नल पर बेकार जल जाता है 156 लीटर फ्यूल

शिवानी ने कहा कि उन्होंने इसे लेकर घाटकोपर के जीजामात सिग्नल पर सर्वे भी किया है। इसके आधार पर उन्होंने बताया कि सिग्नल पर हर रोज औसतन 156 लीटर फ्यूल जलता है। इसके साथ ही सिग्नल पर खड़ी गाड़ियां 371 किलो कार्बन डाई ऑक्साइड उत्सर्जित करती हैं। वहीं, इसे लेकर महाराष्ट्र पलूशन कंट्रोल बोर्ड (एमपीसीबी) के चेयरमैन सुधीर श्रीवास्तव ने कहा कि यह एक अच्छा आइडिया है, लेकिन इसके लिए ट्रैफिक विभाग के मदद की जरूरत होगी। हमें खुशी है कि लोग इस समस्या के समाधान के लिए नए आइडियाज लेकर आ रहे हैं।

झारखंड में किचन गार्डन से महिलाएं दूर कर रही हैं कुपोषण की समस्या

झारखंड के पश्चिम सिंहभूमि जिले की ग्रामीण महिलाएं अब न खुद और न अपने बच्चों को केवल माड़-भात खिला रही हैं, बल्कि अब उनके खाने की थाली में एक-दो सब्जियां भी शामिल हो रही हैं। कुपोषित बच्चों का इलाज कराने आ रहीं महिलाएं अस्पताल के किचन गार्डन में भी साग-सब्जियां उगा रही हैं और उसे बच्चों के खाने में शामिल कर रही हैं।

पश्चिम सिंहभूमि के एक अधिकारी ने बताया कि नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे रिपोर्ट के अनुसार पश्चिम सिंहभूमि जिले में करीब दो लाख से ज्यादा ग्रामीण बच्चे कुपोषण के शिकार हैं। इस रिपोर्ट के सामने आने के बाद जिला प्रशासन अपने जिले पर लगे इस कलंक को मिटाने के लिए तरह-तरह के प्रयास कर रहा है। इसके तहत प्रखंड कार्यालयों, आंगनबाड़ी केंद्रों, स्कूलों और अस्पतालों में किचन गार्डन की शुरुआत करने की योजना बनाई है। चाईबासा के उपविकास आयुक्त (डीडीसी) आदित्य रंजन ने आईएएनएस को बताया कि फिलहाल चाईबासा सदर अस्पताल, सदर प्रखंड और एक स्थानीय स्कूल में किचन गार्डनिंग या पोषण वाटिका की शुरुआत की गई है, जो कई स्थानों पर अभी प्रारंभिक चरण में है। इसके लिए करीब 50 महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया है। उन्होंने बताया कि सदर अस्ताल स्थित

कुपोषण उपचार केंद्र में कुपोषित बच्चे इलाज के लिए अपने परिवार के साथ आते थे, इसलिए यहां से किचन गार्डनिंग की शुरुआत की गई। सदर प्रखंड परिसर में भी इसकी शुरुआत की गई है।

दाल-भात केंद्रों में पकाई जा रही हैं किचन गार्डन से उपजीं सब्जियां

चाईबासा सदर प्रखंड की प्रखंड विकास पदाधिकारी पारुल सिंह ने बताया कि प्रखंड परिसर में किचन गार्डन से उपजीं सब्जियां दाल-भात केंद्रों में पकाई जा रही हैं। उन्होंने कहा कि जल्द ही यहां के आंगनबाड़ी केंद्रों में भी इसे शुरू किया जा सकेगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक सब्जियों के अपने-अपने गुण होते हैं। किसी में प्रोटीन तो किसी में विटामिन, काबरेहाइड्रेट, मिनरल्स, ज्यादा मात्रा में पाए जाते हैं। किचन गार्डन से अलग-अलग सब्जियां उपलब्ध कराई जाती हैं और उसे ही दाल-भात केंद्रों में भेजा जाता है।

कुपोषित बच्चों की माताएं स्वयं अपने हाथों से उगा रही हैं सब्जियां

सदर अस्पताल स्थित किचन गार्डन में भी कुपोषित बच्चों की मां स्वयं अपने हाथों से साग-सब्जियां उगा रही हैं और यही साग-सब्जी कुपोषित बच्चों और अस्पताल में भर्ती मरीजों को खिलाई जा रही है। कुपोषण उपचार केंद्र के प्रमुख डॉ. जगन्नाथ हेम्ब्रम ने खुद करीब 25 महिलाओं को विशेष प्रशिक्षण दिया है। उन्होंने बताया कि विभिन्न कारणों से कुपोषित बच्चे के साथ कुपोषण उपचार केंद्र में इलाजरत बच्चों की माताएं भी आकर रहती हैं। अपने बच्चों की देखभाल करने के साथ-साथ उनके पास काफी खाली समय भी रहता है। उन्होंने कहा कि उप विकास आयुक्त आदित्य रंजन ने कुपोषण की समस्या को जिले से खत्म करने की मुहिम के तहत सदर अस्पताल में उपलब्ध खाली भूमि पर पोषक साग-सब्जी उगाने का निर्णय लिया। शुरुआत में उप विकास आयुक्त के निर्देश पर प्रखंड विकास पदाधिकारी ने यहां आई हुईं महिलाओं के साथ विचार-विमर्श किया। कई माताओं ने स्वेच्छा से किचन गार्डन में सब्जियां उगाने की बात सहर्ष कही। इसके बाद यहां किचन गार्डन शुरू हो गया।

कुपोषित जिलों में गिना जा रहा है चाईबासा

उन्होंने बताया कि यहां कुपोषित बच्चे करीब 15 से 20 दिन इलाजरत रहते हैं और औसतन 25 से 30 बच्चे रहते हैं। उप विकास आयुक्त आदित्य रंजन ने कहा कि चाईबासा जिला पिछड़ा हुआ है। हमारे लिए दुर्भाग्य की बात है कि इस जिले की कुपोषण जिलों में गिनती की जा रही है। जिले के सभी मडल आंगनबाड़ी केंद्रों में किचन गार्डन बनाने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने आशा जताई कि यहां ऑर्गेनिक तरीके से साग-सब्जियां उगाकर माताएं बच्चों को स्वस्थ बनाने में अहम भूमिका तो निभाएंगी ही, अपने घर लौटकर भी वह ऐसा करेंगी।

अब गांव में भी बढ़ रहे हैं किचन गार्डन

कुपोषण केंद्र में अपने आठ वर्षीय पुत्र को इलाज कराने आईं मझगांव क्षेत्र की उर्मिला ने कहा कि किचन गार्डन को अब महिलाएं गांव में बढ़ाने लगी हैं। उन्होंने कहा कि अब गांव के लोग छोटे से भी स्थान में साग-सब्जी उपजा रहे हैं। अस्पताल में यह अच्छी पहल है, इससे महिलाएं सीख रही हैं। बहरहाल, किचन गार्डन से कुषोषण को दूर करने की जिला प्रशासन की अनोखी पहल की सराहना की जा रही है।

मां की मौत के बाद टूटा था भागीरथी की पढ़ाई का सपना 105 की उम्र में दी चौथी की परीक्षा

पढ़ने की कोई उम्र नहीं होती, इसकी शुरुआत कभी भी हो सकती है, बस व्यक्ति के अंदर जज्बा और ललक होनी चाहिए। इसका ताजा उदाहरण है केरल की भागीरथी अम्मा। बचपन से पढ़ने की अपनी ख्वाहिश भागीरथी अम्मा ने 105 साल की उम्र में पूरी कर मिसाल कायम कर दी है।

भागीरथी अम्मा ने राज्य साक्षरता मिशन के तहत चौथी कक्षा के समकक्ष परीक्षा में हिस्सा लिया है। वह हमेशा ही पढ़ना चाहती थीं, ज्ञान अर्जन करना चाहती थीं। अम्मा जब नौ साल की थीं तो वह तीसरी कक्षा में पढ़ती थीं और इसके बाद पढ़ाई छोड़ दी थी। उन्हें अपनी मां की मौत की वजह से अपना यह सपना छोड़ना पड़ा, क्योंकि इसके बाद भाई-बहनों की देखरेख की जिम्मेदारी उन पर आ गई थी। इन सारी जिम्मेदारियों से जब वह उबरीं, तब तक 30 साल की उम्र में उनके पति की मौत हो गई और फिर छह बच्चों की जिम्मेदारी उन पर ही आ गई। जिंदगी की जद्दोजहद ने भले ही लगातार उन्हें पढ़ाई से दूर रखा हो, लेकिन वह अपना सपना कहीं दबाए हुए बैठी थीं और जब मौका मिला तो उन्होंने इसे पूरा करने का सोच लिया। जब वह कोल्लम स्थित अपने घर में चौथी कक्षा के समतुल्य परीक्षा दे रही थीं तो वह महज परीक्षा ही नहीं दे रही थीं, बल्कि पढ़ाई की चाहत रखने वाले दुनिया के लोगों के लिए मिसाल कायम कर रही थीं।

साक्षरता मिशन के तहत बनाया रिकॉर्ड

साक्षरता मिशन के निदेशक पीएस श्रीकला ने बताया कि भागीरथी अम्मा केरल साक्षरता मिशन के अब तक के इतिहास में 'समकक्ष शिक्षा हासिल करने वाली' सबसे बुजुर्ग व्यक्ति बन गई हैं। मिशन के विशेषज्ञ वसंत कुमार ने बताया कि भागीरथी अम्मा को लिखने में दिक्कत होती है, इसलिए उन्होंने पर्यावरण, गणित और मलयालम के तीन प्रश्नपत्रों का हल तीन दिन में लिखा है और इसमें उनकी छोटी बेटी ने मदद की है।

105 की उम्र में भी काफी तेज है याददाश्त

कुमार ने बताया कि इस उम्र में भी उनकी याद्दाश्त तेज है। उन्हें देखने में भी कोई समस्या नहीं होती है। अब भी बहुत अच्छे से गा लेती हैं। उन्होंने बताया कि अम्मा परीक्षा में हिस्सा लेकर बहुत खुश हैं।

नहीं मिलती कोई पेंशन, मदद की दरकार

इतनी मेहनत और लगन से पढ़ाई करने वाली अम्मा के पास आधार कार्ड नहीं है, इसलिए उन्हें न तो विधवा पेंशन मिलती है और न ही वृद्धा पेंशन मिलती है। उन्हें उम्मीद है कि अधिकारी उनको पेंशन दिलाने के लिए कदम उठाएंगे।

कॉरपोरेट वर्ल्ड की नौकरी छोड़ ऐसे करोड़पति बनीं मोमोज वाली मैडम

दिल्ली में मोमोज वाली मैडम के नाम से मशहूर यूनिटा फूड्स की डायरेक्टर पूजा महाजन के मोमोज देशभर में सप्लाई हो रहे हैं। उनकी फ्रैक्ट्री में 10 से 12 लाख मोमोज बनाए जाते हैं। वह वेज-नॉन वेज मोमोज, स्प्रिंग रोल्स, समोसा, इडली, बटाटा वड़ा भी बना रही हैं। पूजा अपने घर की पहली सफल महिला उद्यमी हैं।

देखते ही देखते अरबों की कंपनी बन चुकी ऑनलाइन फूड ऑर्डरिंग और डिलिवरी सेवा कंपनी स्विगी के राहुल जैमिनी, श्रीहर्ष और नंदन रेड्डी की तो खैर बात ही छोड़ दीजिए, फूड मार्केट में नए-नए स्टार्टअप आए दिन कदम रखते ही कारोबार की ऊंची उड़ान भरने लग रहे हैं। अपने बूते करोड़ों का बिजनेस खड़ा कर चुकी दिल्ली की पूजा महाजन मोमोज वाली मैडम के नाम से मशहूर हो चुकी हैं। यूनिटा फूड्स की डायरेक्टर और यम यम डिमसम्स नाम से उनके मोमोज देशभर में सप्लाई हो रहे हैं। एक माह में उनकी फैक्ट्री बारह लाख मोमोज बना देती है।

शुरुआती दिनों में करना पड़ा चुनौतियों का सामना

पूजा बताती हैं कि वह नौकरी पेशा कमाते-खाते परिवार से पहली ऐसी महिला रही हैं, जिसने बिजनेस में कदम रखा है। उनके माता-पिता पेशे से शिक्षक हैं। पढ़ाई के बाद वह भी कई बड़ी कंपनियों से जुड़ीं, लेकिन जॉब में मन नहीं लगा। उन्होंने गुड़गांव में जब मोमोज की ट्रॉली शुरू की तो मोमोज की सप्लाई करना भी उन्हें नहीं आता था। उस समय घिटोरनी में अपना काम शुरू किया तो मोमोज कारोबार में कोई व्यवस्थित कारोबारी नहीं था। शुरुआती दिनों में पूजा को कई तरह की कठिन चुनौतियों का सामना करना पड़ा। कोई उन्हें गाइड करने वाला नहीं था, लेकिन आज की तारीख में उनकी टीम में दो दर्जन से अधिक लोग जुड़े हैं। एक पार्टी तीन से चार लाख मोमोज ले लेती है।

2004 में वह नौकरी छोड़कर चलाने लगीं रेस्त्रां

पूजा पढ़ाई पूरी करने के बाद 1998 में कॉरपोरेट वर्ल्ड में जॉब करने लगी थीं। तभी उन्होंने खुद का बिजनेस करना संकल्प लिया। वर्ष 2004 में वह नौकरी छोड़कर गुड़गांव के डीएलएफ मॉल में बॉम्बे चौपाटी नाम से रेस्त्रां चलाने लगीं। उसी दौरान उन्होंने बॉम्बे के ट्रॉली बिजनेस सिड फ्रैकी में कुछ पैसा लगा दिया। बिजनेस चल निकला तो उन्होंने मोमोज ट्रॉली शुरू कर दी।

वर्ष 2008 में शुरू की खुद की मोमोज फ्रैक्ट्री

पूजा ने वर्ष 2008 में सरकार से लोन लेकर दिल्ली के घिटोरनी में ताइवान से इंपोर्ट मशीन लेकर खुद की मोमोज फ्रैक्ट्री लगा दी। कोल्ड रूम लगवाकर प्लांट में रोजाना हजारों मोमोज बनने लगे। देश भर के सिनेमा हॉल, मल्टीप्लेक्सेस, होटल, बैक्विंट, केटरर्स, रेस्त्रां, कॉफी चेन में उनकी फैक्ट्री के मोमोज सप्लाई होने लगे।

करोड़ों में हो रहा है कारोबार

इस समय पूजा का कारोबार करोड़ों में हो रहा है। महीने भर में उनकी फ्रैक्ट्री में 10 से 12 लाख मोमोज बनाए जाते हैं। उनकी फैक्ट्री में वेज-नॉन वेज मोमोज, स्प्रिंग रोल्स, समोसा, इडली और बटाटा वड़ा भी बनता है। पूजा कहती हैं कि निजी कारोबार के हिसाब अभी उनके पास लॉजिस्टिक सपोर्ट नहीं है। वह धीरे-धीरे, लेकिन पूरी सफलता के साथ अपने उद्यम को विकसित करती जा रही हैं।

20 साल की शेषकला ने कठिनाइयों से लड़ते हुए बनाई अपनी एक पहचान

नेपाल के कपिलवस्तु जिले में एक छोटा-सा गांव है बिठुआ। शेषकला पांडेय इसी गांव के एक बेहद साधारण मधेस परिवार में पैदा हुईं। पिछड़े गांवों के बाशिंदों की जिंदगी से दुश्वारियों का रिश्ता तो यूं भी चोली-दामन का होता है, मगर उसमें भी लड़कियों-औरतों के हिस्से तकलीफें ज्यादा आती हैं। शेषकला का बचपन इससे अछूता न रहा।

इतनी भी आसान नहीं थी राह

वह स्कूल जाती, तो मां-बाबा की हिदायतों की तमाम लक्ष्मण रेखाएं उनके साथ चली आतीं। मासूम मन कभी-कभी यह सवाल जरूर करता कि मां भाइयों को तो कुछ नहीं कहतीं और उन्हें ही क्यों टोकती रहती हैं? मगर गांव का परिवेश ही इस सवाल का जवाब दे देता। आखिर तमाम घरों की लड़कियों के साथ ऐसा ही तो होता था।

शेषकला पड़ने में काफी अच्छी थीं, इसलिए स्कूल के मास्टर भी उनसे काफी खुश रहते। मां-बाबा को भी बेटी की होशियारी की तारीफें अच्छी तो लगती थीं, पर बिरादरी और गांव के दस्तूर उन्हें दायरे में अक्सर खींच लेते थे। बिठुआ गांव की ज्यादातर बेटियां काफी छोटी उम्र में ब्याह दी जातीं। बाल-विवाह इस पड़ोसी देश के सामाजिक जीवन की एक सामान्य बात है। हालांकि नेपाल सरकार ने विवाह का वैधानिक उम्र 20 साल तय कर रखी है, मगर 41 फीसदी लड़कियों की शादी वहां 18 साल से पहले ही हो जाती है। शेषकला भी जब आठवीं कक्षा में पहुंचीं, तो उनके माता-पिता ने बेटी के हाथ पीले कर अपनी जिम्मेदारियों से फारिग होने का मनसूबा बांधा।

शेषकला ने सपनों को दी उड़ान

गांव की लड़कियां बिना किसी न-नुकर के माता-पिता द्वारा चुने लड़के के साथ फेरे लेकर ससुराल विदा हो जाती थीं। मगर शेषकला तो ऊंची तालीम हासिल करने का सपना देख रही थीं। उन्होंने शादी करने से मना कर दिया। शेषकला के माता-पिता की आर्थिक स्थिति इतनी मजबूत न थी कि वे अपनी बेटी के सपनों को पूरे कर पाते। शेषकला को आगे की पढ़ाई के लिए छोटे-मोटे काम करने पड़े। वह सुबह कॉलेज जाती और वहां से लौटने के बाद एक निजी स्कूल में प्राइमरी के बच्चों को अंग्रेजी पढ़ाती। इससे उनका खर्च तो निकलने लगा, कुछ भाई-बहनों की भी मदद करने की स्थिति बन आई।

30 सदस्यों का 'गर्ल्स सर्किल' बनाकर कर रहीं है समाज को जागरूक

शेषकला आज 30 सदस्यों वाले 'गर्ल्स सर्किल' नामक संगठन की प्रमुख हैं। इस संगठन को महिला, बाल एवं समाज कल्याण मंत्रालय और यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड से सहयोग मिलता है। शेषकला अपने इलाके में लड़कियों के भीतर शिक्षा का अलख तो जगा ही रही है, उनकी संस्था बाल विवाह, यौन उत्पीड़न और स्त्रियों एवं लड़कियों के साथ होने वाली हिंसा के खिलाफ भी सक्रिय है। वह महिलाओं की स्वास्थ्य जरूरतों और अधिकारों के प्रति भी समाज को जागरूक बना रही हैं। बमुश्किल 20 साल की शेषकला ने अपने इलाके में सदियों से जमी दकियानूसी परंपराओं के खिलाफ मोर्चा खोला, तो सरकार और समाज के प्रगतिशील लोग भी उनके साथ आ खड़े हुए। पिछले डेढ़ साल में उनके संगठन 'गर्ल्स सर्किल' के हस्तक्षेप ने नौ बच्चियों की जिंदगी बाल विवाह की वेदी पर होम होने से बचा लिया। इस साहसिक काम के लिए उन्हें हाल ही में नेपाल सरकार ने 'अनसंग हीरो अवॉर्ड' से सम्मानित किया है। जिस गांव की कुरीतियों के खिलाफ शेषकला ने दुस्साहस किया, वही गांव आज उनके नाम से देश-दुनिया में रोशन हो गया।

नाबालिगों की शादी देख खुद में जागा कुछ कर दिखाने का जज्बा

अपने गांव की लड़कियों को वह समझाती कि वे बड़े सपने देखें। मगर न चाहते हुए भी शादी के लिए घरवालों के आगे उन्हें झुकते देख शेषकला को दुख होता था। वह कुछ नहीं कर पा रही थीं। इस जुल्म की पीड़ा उनके भीतर गहराती गई और कुछ साल पहले उस वक्त फूट पड़ी, जब उन्हें यह पता चला कि उनके इलाके की एक 13 साल की लड़की ने महज 15 वर्ष के लड़के के साथ शादी के लिए घरवालों की मर्जी के आगे घुटने टेक दिए हैं। उस लड़की का होने वाला पति भारत का था। शेषकला का सब्र टूट गया। बिना कोई वक्त गंवाए वह अपने साथ गांव की कुछ लड़कियों को लेकर पुलिस के पास पहुंच गईं। पुलिस को साथ लेकर वे सब विवाह स्थल पर पहुंचीं और अंततः उसे शादी रोकने में कामयाबी मिली। इस घटना ने शेषकला के भीतर आत्म-विश्वास भर दिया।

मोटापे की वजह से मंगेतर ने छोड़ा, 46 किलो वजन घटा कर बनी मिस ग्रेट ब्रिटेन 2020

खुद पर विश्वास हो तो कुछ भी काम असंभव नहीं : जेन एट्किन

अक्सर लोगों को मोटापे की वजह से कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ब्रिटेन की रहने वाली जेन एट्किन भी उन्ही में से एक थीं, जिनको मोटापे की वजह से उनके मंगेतर ने भी छोड़ दिया था, लेकिन जेन इससे टूटीं नहीं, बल्कि इससे उन्हें प्रेरणा मिली और आज वो मिस ग्रेट ब्रिटेन 2020 हैं।

जेन खुद को देती हैं अपनी सफलता का श्रेय

मीडिया रिपोर्ट्र्स के मुताबिक, दो साल पहले जेन का वजन 109 किलो था, लेकिन मंगेतर के छोड़ने के बाद उन्होंने जिम ज्वाइन किया और खूब मेहनत की। साथ ही उन्होंने अपनी डाइट को भी कंट्रोल किया। दो साल में ही उन्होंने करीब 46 किलो वजन घटा लिया। मंगेतर के अलावा जेन को वजन घटाने के लिए एक और जिस चीज ने प्रेरित किया, वह थी उनकी पसंदीदा ड्रेस, जो उन्हें फिट नहीं आ रही थी। 26 वर्षीय जेन ने वजन घटाने के बाद मिस ग्रेट ब्रिटेन 2020 प्रतियोगिता में हिस्सा लिया और खिताब अपने नाम कर लिया। वह कहती हैं कि उन्हें खुद भी विश्वास नहीं हो रहा है कि वह ये प्रतियोगिता जीत चुकी हैं। हालांकि इससे पहले साल 2017 में जेन प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में पहुंची थीं, जबकि 2018 में रनरअप रह चुकी हैं। और वह अपनी सफलता का श्रेय खुद को देती हैं, जेन कहती हैं कि अगर कुछ कर दिखाने का जज्बा और खुद पर विश्वास हो तो कुछ भी किया जा सकता है, कोई भी काम असंभव नहीं हैं।

हफ्ते में पांच बार जाती हैं जिम

जेन लिनकोलनशायर के अलकेबी शहर की रहने वाली हैं। वह कहती हैं कि वो हफ्ते में पांच बार जिम जाती हैं। यह उनकी जिंदगी का अहम हिस्सा बन गया है। वह अभी भी अपनी पसंद की चीजें खूब खाती हैं, लेकिन इसके साथ ही वो इस बात का भी ध्यान रखती हैं कि वो कौन सी चीज ज्यादा खाती हैं और बाद में उस पर कंट्रोल करती हैं।

इंस्टाग्राम पर पांच हजार से ज्यादा फॉलोवर्स

जेन सोशल मीडिया का भी भरपूर इस्तेमाल करती हैं। इंस्टाग्राम पर उनके पांच हजार से ज्यादा फॉलोवर्स हैं। वहां उन्होंने वो सभी तस्वीरें डाल रखी हैं, जो उनकी जिंदगी के बदलाव से जुड़ी हैं। जेनिफर ने इस बात को साबित कर दिया है कि अगर कुछ करने की ठान ली जाए तो कोई भी चीज नामुमकिन नहीं है।

Printed, Published & Owner by ATUL SHARMA & Printed at SARANGLE PRINTERS, BASTI GUZAN JALANDHAR (PUNJAB) and Published from ATUL SHARMA, NN-453 GOPAL NAGAR JALANDHAR (PUNJAB)
Editor: ATUL SHARMA*
*Responsible for selection of News under the PRB ACT. PUNHIN/2019/77863, All Rights Reserved. Reproduction in whole or in part without permission is prohibited. All disputes shall be settled at Jalandhar jurisdiction only.

डिप्टी कमिश्नर और पुलिस कमिश्नर ने हाईवे अथारटी के अधिकारियों को पी.ए.पी. चौंक में स्टेशन सर्वे करने के लिए कहा

पी.ए.पी. ओवर ब्रिज को 8 लेन बनाने के लिए भी दिये जरुरी निर्देश

■ जालन्धर/विजय कुमार

डिप्टी कमिश्नर जालंधर श्री वरिन्दर कुमार शर्मा और पुलिस कमिश्नर गुरप्रीत सिंह भुल्लर ने राष्ट्रीय हाईवे अथारटी के आधिकारियों को कहा है कि वह पी.ए.पी. चौंक में यातायात को सुचारू ढंग से चलाने के लिए स्टेशन सर्वे किया जाये। इस के अतिरिक्त पी.ए.पी. ओवर ब्रिज को 8 मार्गी करने के काम को भी शुरू करने के बारे में जरुरी निर्देश जारी किये गए हैं। दोनों आधिकारियों ने आज हाईवे अथारटी के आधिकारियों से लंबे विचारचर्चा के बाद कहा गया कि राष्ट्रीय हाईवे अथारटी के अधिकारी पी.ए.पी. और रामामंडी ओवर ब्रिज को 8 मार्गी करने के लिए जरूरी कदम तुरंत उठाने और इस पुल को जल्द से जल्द पूर्ण किया जाये। उन्होने कहा कि जालंधर शहर की तरफ से और अमृतसर से हजारों वाहन पी.ए.पी. चौंक में आ कर फंस जाते हैं जिस कारण यातायात में बडी दिक्कत पेश आ रही है। उन्होने कहा कि इस समस्या को दूर करने के लिए तुरंत स्टेशन सर्वे करके संभावी हलों की तलाश करके उनको लागू किया जाये। इस के अतिरि1त दोनों आधिकारियों ने हाईवे अथारटी की तरफ से बी.एस.एफ. चौंक से पी.ए.पी. चौंक तक दो लेन मार्ग बनाने के प्रस्ताव को मजूरी दे दी गई है जिस से अमृतसर जाने वाले लोगों को बडी राहत मिलेगी। उन्होने हाईवे अथारटी के इस प्रस्ताव से सहमति जताई कि बी.एस.एफ चौंक से पी.ए.पी. चौंक तक सड़क को 7 मीटर तक चौडा किया जाये। इस के अतिरिक्त पी.ए.पी. चौंक में अमृतसर तरफ की तरफ 85 मीटर लंबा बाइपास बनाने के विचार को भी सहमति दे दी गई है। उन्होने कहा कि फ्लाईओवर की दीवार के साथ वाले नालों को भूमिगत बनाया जाये जिससे राहगीरों को किसी किस्म की दिक्कत पेश न आए।

इस अवसर पर डी.सी.पी. नरेश डोगरा, सहायक कमिश्नर पुलिस एच.एस. भल्ला, प्रोजैक्ट डायरैक्टर राष्ट्रीय हाईवे अथारटी कर्नल (रिटा.) योगेश सिंह उपस्थित थे।

डा. सुरिन्दर सिंह ने मुख्य कृषि अधिकारी जालंधर के तौर पर ओहदा संभाला

■ जालंधर/प्रभातसूरी

पंजाब सरकार के आदेशों अनुसार आज डा सुरिन्दर सिंह ने बतौर मु2य कृषि अधिकारी जालंधर का चार्ज संभाल लिया है। इस अवसर पर कृषि और किसान भलाई विभाग जिला जालंधर के समूह स्टाफ ने डा. सुरिन्दर सिंह का स्वागत किया।

वर्णनयोग्य है कि डा .सुरिन्दर सिंह पहले जिला जालंधर में बतौर कृषि अधिकारी के तौर पर सेवा कर चुके हैं, अब सरकार के आदेशों अनुसार पदउन्नात होने के उपरांत उनकी मुख्य कृषि अधिकारी जालंधर के तौर पर तैनाती हुई है। डा सुरिन्दर सिंह ने इस अवसर पर समूह स्टाफ को कहा कि कृषि के संपूर्ण विकास के लिए सभी सै1शनों में बेहतरीन तालमेल स्थापित किया जायेगा। उन्होंने कहा कि जिले में किसानों को कुआलटी खादें और बीजूँ की सप्लाई यकीनी बनाने के लिए हर प्रयास किया जायेगा। उन्होंने कहा कि पंजाब सरकार के आदेशों अधीन कुदरती साधनों की कम से कम प्रयोग करते हुए किसान की आमदन बढाने के लिए जिले में हर प्रयास किया जायेगा। इस अवसर पर डा जसवंत राय कृषि अधिकारी डा कुलदीप सिंह मतोवाल सीड सर्टीफीकेशन अधिकारी जालंधर, डा बलबीर चंद सहायक गन्ना विकास कृषि अधिकारी, डा नरेश कुमार गुलाटी कृषि अधिकारी, डा सुरजीत सिंह और डा मनदीप सिंह कृषि विकास अधिकारी, डा विपुल छाबडा डिप्टी पीडी आत्मा जालंधर की तरफ से डा सुरिन्दर सिंह, प्रसिद्ध किसान श्री गुरदेव सिंह उपस्थित थे।

पहले सुखबीर बरगाड़ी कांड में शहीद हुए सिंहों की लाशें उठवाने के लिए दिए करोड़ों रुपए बारे स्थिति स्पष्ट करें-कांगड़

■ जालन्धर/विजय कुमार

बरगाड़ी कांड के मुख्य गवाह रहे स्वर्गीय सुरजीत सिंह की पत्नी जसवीर कौर की तरफ से आज चण्डीगढ़ में की गई प्रैस कॉन्फ्रेंस के दौरान सुखबीर सिंह बादल पर लगाए गए दोष कि सुखबीर बादल ने बरगाड़ी कांड में शहीद हुए सिंहों की लाशें उठवाने के लिए कुछ व्यक्तियों को करोड़ों रुपए दिए थे, बारे बोलते हुए पंजाब के राजस्व मंत्री श्री गुरप्रीत सिंह कांगड़ ने कहा कि इस सम्बन्धी शिरोमणि अकाली दल और सुखबीर बादल स्थिति स्पष्ट करें कि क्या उन्होंने यह करोड़ों रुपए की राशि लाशें उठवाने के लिए क्यों दी थी।

श्री कांगड़ ने आज यहाँ जारी बयान में कहा कि वह इस मामले सम्बन्धी पहले भी स्पष्ट कर चुके हैं कि उनका सुरजीत सिंह की मौत या बिजली चोरी के मामले से कोई सम्बन्ध नहीं है और जसवीर कौर किसी को राजनैतिक लाभ देने के लिए झूठे दोष लगा रही है।

उन्होंने यह भी कहा कि यह प्रैस कॉन्फ्रेंस का प्रबंध करने वाले बिक्रम सिंह मजीठिया का फर्ज बनता था कि वह जसवीर कौर के करोड़ों रुपए देने के दोषों का जवाब मौके पर ही देते क्योंकि यह दोष बहुत गंभीर हैं परन्तु मजीठिया ने इस सम्बन्धी एक भी शब्द नहीं बोला जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि जसवीर कौर के सुखबीर सिंह पर लगाये गए दोष सच्चे हैं।

डिप्टी कमिश्नर द्वारा 10 वर्षीय वैबसाईट डिवैलपर का किया सम्मान

विश्व रिकार्ड इंडिया आर्गेनाइजेशन के पास से जीता यंगैस्ट वैबसाईट डिवैलपर का ऐवार्ड

■ जालंधर/प्रभातसुरी

डिप्टी कमिश्नर जालन्धर श्री वरिन्दर कुमार शर्मा ने आज केवल 10 वर्षीय की उम्र में ही विश्व रिकार्ड इंडिया आर्गेनाइजेशन के पास से यंगैस्ट वैबसाईट डिवैलपर का अवार्ड जीतने वाले मीधांश कुमार गुप्ता का सम्मान किया गया।

मास्टर मीधांश कुमार गुप्ता ने केवल 9 साल की उम्र में ही दो वैबसायट 21 stjune.com and gsssjianchabbewal.com बनाने का रिकार्ड बनाया था। मीधांश की इस प्राप्ति को बाकी विद्यार्थियों और नौजवानों के लिए प्रेरणा का स्रोत बताते हुए श्री शर्मा ने कहा कि वर्तमान समय तकनीक का युग है और मीधांश जैसे नौजवानों द्वारा तकनीक का उचित प्रयोग को प्रफुलित करके समाज पर देश की तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जा रही है। उन्होने कहा कि मीधांश की तरफ से तकनीक के क्षेत्र में किया जा रहा काम देश की तरक्की और आम लोगों की जिंदगी को आसान करने में अहम भूमिका निभाएगा।

सरकारी मैडीकल कॉलेज के प्रिंसिपल बने डायरैक्टर प्रिंसिपल-सोनी

■ चंडीगढ़/प्रभातसूरी

पंजाब सरकार राज्य के सरकारी मैडीकल कॉलेजों के प्रिंसिपल को प्रशासनिक स्तर पर और ताकतें देने के इरादे से मैडीकल कॉलेज के प्रिंसिपल के पद को डायरैक्टर प्रिंसिपल के पद में तबदील करने सम्बन्धी हुक्म जारी कर दिए गए हैं। इस फ़ैसले से सरकारी मैडीकल कॉलेज अमृतसर, पटियाला, फ़रीदकोट और मोहाली में बनने वाले नये मैडीकल कॉलेज के प्रिंसिपल अब डायरैक्टर प्रिंसिपल के तौर पर जाने जाएंगे। यह फैसला आज यहाँ पंजाब के डॉक्टरी शिक्षा एवं अनुसंधान मंत्री पंजाब श्री ओम प्रकाश सोनी की अध्यक्षता अधीन

हुई उच्च स्तरीय मीटिंग में लिया गया। मीटिंग में अन्यों के अलावा प्रमुख सचिव श्री डी.के. तिवारी, श्री के.के. तलवाड़ स्वास्थ्य एवं डॉक्टरी शिक्षा संबंधी सलाहकार पंजाब सरकार, डॉ. राज बहादुर वाइस चांसलर बाबा फ़रीद यूनिवर्सिटी ऑफ हैल्थ साइंसज़ और पंजाब राज्य के सरकारी कॉलेजों के प्रिंसिपल उपस्थित थे। मीटिंग में पी.सी.एम.एस. कर रहे डॉक्टर जो एम.डी. की डिग्री कर रहे हैं उनको एम.डी. के उपरांत सीनियर रैज़ीडैंसी के लिए मेरिट के आधार पर तजरीह देने संबंधी विचार-विमर्श किया गया जिससे नये बने डॉक्टरों को और तजुर्बा मिल सके और मैडीकल कॉलेजों को भी एक साल और एस.आर. की सेवाएं मिल सकें। इस मौके पर श्री सोनी ने मैडीकल कॉलेजों में शाम के समय ओ.पी.डी. सेवाएं शुरू करने संबंधी भी संभावना तलाशने के हुक्म दिए गए जिससे नौकरीशुदा लोगों को शाम के समय भी बढ़िया सेवाएं मिल सकें।

स्पोर्ट्स

भारतीय क्रिकेट टीम के नए चीफ सिलेक्टर बने सुनील जोशी, हरविंदर भी पैनल में शामिल

■ मुंबई/ब्यूरो

भारतीय टीम के पूर्व स्पिनर सुनील जोशी को बीसीसीआई की क्रिकेट सलाहकार समिति (सीएसी) ने बुधवार को राष्ट्रीय चयन समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया जबकि पांच सदस्यीय इस समिति में पूर्व तेज गेंदबाज हरविंदर सिंह को भी शामिल किया। सीएसी में पूर्व भारतीय क्रिकेटर मदन लाल, आर पी सिंह और सुलक्षणा नाइक शामिल हैं जिन्होंने दोनों चयनकर्ताओं को चुना जिसमें जोशी ने दक्षिण क्षेत्र के प्रतिनिधि के रूप में एमएसके प्रसाद की जगह ली। बीसीसीआई ने एक अभूतपूर्व निर्णय में कहा था कि सीएसी एक साल बाद चयन समिति के कार्यों की समीक्षा करेगी और उसी के मुताबिक सुझाव देगी। बीसीसीआई के सचिव जय शाह ने कहा, ''सीएसी ने राष्ट्रीय चयन पैनल के अध्यक्ष के रूप में पूर्व स्पिनर सुनील जोशी के नाम की सिफारिश की है। सीएसी एक साल के बाद उनके काम की समीक्षा करेगा और बीसीसीआई को सुझाव देगा।'' समिति में मध्य क्षेत्र से गगन खोड़ा की जगह लेने के लिए हरविंदर को चुना गया।

चयन समिति में जतिन परांजपे, शरणदीप सिंह और देवांग गांधी पहले से तीन अन्य चयनकर्ता हैं। मदन लाल ने कहा, ''हमने इस काम के लिए सर्वश्रेष्ठ उम्मीदवार का चयन किया है। '' इससे पहले सीएसी को इन दो पदों के लिये कुल 40 आवेदन मिले थे जिसमें से जोशी और हरविंदर के अलावा वेंकटेश प्रसाद, राजेश चौहान और लक्ष्मण शिवरामकृष्णन को सीएसी ने साक्षात्कार के लिए बुलाया था।

आईपीएल में होने वाले खर्चों को कम करेगा बीसीसीआई, उठाया ये बड़ा कदम

बीसीसीआई ने इंडियन प्रीमियर लीग के आगामी सत्र के लिए खर्चे में कटौती करने का फैसला किया है। बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा, ''सभी फ्रेंचाइजी काफी अच्छी स्थिति में हैं। उनके पास अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रायोजन जैसे कई तरीके हैं।

■ नई दिल्ली/ब्यूरो

बीसीसीआई ने इंडियन प्रीमियर लीग के आगामी सत्र के लिए खर्चे में कटौती करते हुए चैंपियन और उप विजेता टीम को मिलने वाली इनामी राशि को 2019 की तुलना में आधा करने का फैसला किया है। सभी आईपीएल फ्रेंचाइजियों को भेजे सर्कुलर में बीसीसीआई ने सूचित किया है कि आईपीएल चैंपियन को 20 करोड़ रुपये की जगह अब सिर्फ 10 करोड़ रुपये मिलेंगे।

बीसीसीआई के पत्र के अनुसार, ''खर्चों में कटौती की प्रक्रिया के तहत वित्तीय पुरस्कारों को दोबारा तय किया गया है। चैंपियन टीम को 20 करोड़ रुपये की जगह 10 करोड़ रुपये मिलेंगे। उप विजेता टीम को 12 करोड़ 50 लाख रुपये की जगह छह करोड़ 25 लाख रुपए दिए जाएंगे।''क्वालीफायर में हारने वाली दो टीमों में प्रत्येक को अब चार करोड़ 37 लाख 50 हजार रुपये मिलेंगे। बीसीसीआई के एक सूत्र ने कहा, ''सभी फ्रेंचाइजी काफी अच्छी स्थिति में हैं। उनके पास अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रायोजन जैसे कई तरीके हैं। यही कारण है कि इनामी राशि को लेकर यह फैसला किया गया।''हालांकि आईपीएल मैच की मेजबानी करने वाले राज्य संघ को एक करोड़ रुपये मिलेंगे जिसमें बीसीसीआई और फ्रेंचाइजी दोनों 50 लाख रुपये का योगदान देंगे।

यह भी पता चला है कि बीसीसीआई के मध्य स्तर के कर्मचारियों को पहले की तरह उन एशियाई देशों (श्रीलंका, बांग्लादेश, यूएई) की यात्रा के लिए विमान का बिजनेस क्लास का टिकट नहीं मिलेगा जहां उड़ान का समय आठ घंटे से कम है।